Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 5831240

Roll No. 24040000008
Total Mark 45/75.00

Exam MASTER OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A020701T - VED NIRUKT EWAM PRATISHAKHYA

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	3/5	8	NA/15				
1B	3/5	9	NA/15				
1C	3/5						
1D	3/5						
1E	3/5						
1F	3/5						
1G	3/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2	9/15						
3	NA/15						
4	NA/15						
5A	NA/7						
5B	NA/7						
5C	NA/7						
6	NA/15						
7	9/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-II

Date of Exam: 23-12-24 Shift: 1st Room No.: 10
Paper Code: AO20701T Subject: वेद, प्रातिशाख्य एवं निरुक्त Semester: 1st
Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI
Roll No.: 2404000008

Signature of Candidate / Signature of Invigilator / COE Facsimile

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures ____ Max. Marks ____
Total Marks in Words ____

Paper Code: A020701T

Signature of Evaluator

Course: M.A.
Session: 2024-25 Year/Semester: 1st
Subject Name: वेद, प्रातिशाख्य एवं निरुक्त
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A020701T

Exam Date: 23-12-2024

Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI

Father's Name: ONKAR AGNIHOTRI

महाविद्यालय का कोड College Code: FB01

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: FB01

परीक्षा का प्रकार Type of Exam: नियमित Regular ● / भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex-Student ○ / व्यक्तिगत Private ○ / बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO. 5831240

Paper Code: A020701T

नामांकन संख्या Enrollment Number: CSJMA21001444482

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2404000008

पेपर कोड Paper Code: A020701T

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि उत्तरपत्र पाने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. ... 3. गोलों को काले या नीले बालपेन से भरा जाये।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in [ ] boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken thecircles completely.

Correct Method: ① ● ③ ④   Incorrect Method: ✓ ✗ ◉ ●

4. Make no Stray marks o n this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्दिष्ट स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश।

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठो पर दोनो तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा को नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in [ ] Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9

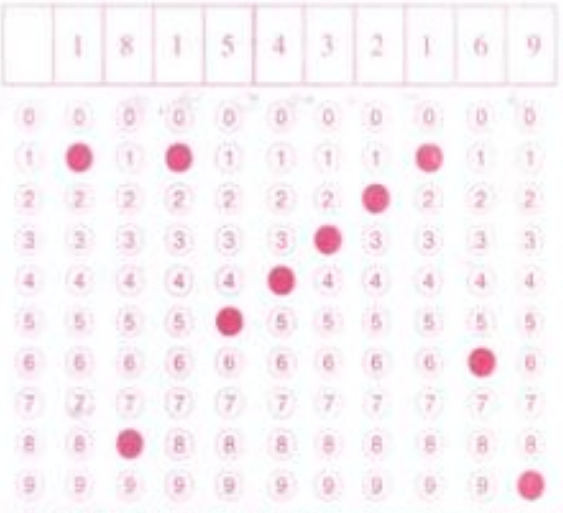

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

-: खण्ड - अ :-

उत्तर-1-A "यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम्"

सन्दर्भ :- प्रस्तुत सूक्त पंक्ति ऋग्वेद के 'वरुण सूक्त' से उद्धृत है। इसके ऋषि शुनः शेप, देवता वरुण हैं।

प्रसंग :- वरुण सूक्त में वरुण देवता की स्तुति की गयी है। वरुण देव ने ही पूरे विश्व को व्याप्त किया है। वरुण देव शासक तथा नियन्त्रक है।

अर्थ :- इस संसार (विश्व) में जो कुछ भी है वह सब वरुण देव के ही व्रत से है।

व्याख्या :- ऋग्वेद में इन्द्र, अग्नि आदि देवताओं के बाद वरुण देव का स्थान आता है। वरुण को एक शासक या शासक के रूप में चित्रित किया गया है। वह संसार का नियन्त्रक है। जो कुछ भी संसार में जड़-चेतन स्वरूप है वह सब वरुण के ही कारणभूत है। जो कुछ भी विश्व में व्याप्त है उसके उत्पन्नकर्ता, नियन्त्रक वह वरुण ही है। यह सब उनके व्रत (संकल्प) का ही फल है।

उत्तर-1(B) 'पुराणी देवि युवतिः पुरंधि' :-

"पुराणी देवि युवतिः पुरंधि" उषा देवि के लिए कहा गया है। वह उषस सूक्त से उद्धृत है। उषा को पुरातन युवति कहा गया है अर्थात् वह प्राचीन होने पर भी नई युवती के सदृश्य अनुपम रूप में दिखायी पड़ती है। उषा प्रतिदिन उत्पन्न होती है।

Paper Code

2

उत्तर-1(c) नासदीय सूक्त :→ नासदीय सूक्त ऋग्वेद दशम् मण्डल का 129 वाँ सूक्त है। इसके ऋषि परमेष्ठी प्रजापति हैं। इसे सृष्टि - उत्पत्ति सूक्त भी कहा जाता है। इस सूक्त में सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व प्रलय दशा का वर्णन है। जब कुछ भी नहीं था। नासदीय सूक्त का सार इस प्रकार है - उस समय न तो सत् था, न असत् था, न जल था, न मृत्यु भी और न ही उसका अभाव था। उस समय सब मात्र ब्रह्म प्राण से युक्त, क्रिया से शून्य था। उसी ब्रह्म में सर्वप्रथम संसार उत्पत्ति की इच्छा का बीज जगा।

नासदीय सूक्त की कल्पना आधारित सूक्त भी कहते हैं। क्योंकि उस प्रलय दशा का वर्णन करने वाला कोई व्यक्ति भी उस समय नहीं था। अब प्रश्न यह है कि सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुयी? कौन उसके ... में बतायेगा? अर्थात् कोई नहीं। उस समय एकमात्र ही था। वही यह जान सकता है।

उत्तर -1(D) निरुक्त :→ 6 वेदांगों में निरुक्त को वेद पुरुष का 'श्रोत्र' कहा गया है।

'निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते'।

निरुक्ताचार्य यास्क ने अपने ग्रन्थ में महत्व स्पष्ट करते हुए कहा है कि मन्त्रों के अर्थ का ज्ञान करने हुए निरुक्त का अध्ययन आवश्यक है। इसके ज्ञान के बिना मन्त्रों के अर्थ को नहीं समझ सकते हैं। अथापि इदम् अन्तरेण मन्त्रेषु अर्थप्रत्ययो न जायते

निरुक्त के द्वारा मन्त्रों के अर्थ, अर्थ करने की पद्धति का ज्ञान तो होता ही है साथ ही वैदिक एवं लौकिक भाषा के कठिन एवं ~~दुरुक्त~~ दुरुह शब्दों के निर्वचन, ~~व्युत्पत्ति~~ व्युत्पत्ति आदि का भी ज्ञान होता है।

उत्तर- 1 (ए) षड्भाव- विकार :- वार्ष्यायणि ऋषि ने किसी भी पदार्थ से सम्बन्धित छ: भाव विकार बताये हैं।

~~षड~~ "षड्भावविकारा भवन्तीति वार्ष्यायणिः।

जायते अस्ति वर्धते विपरिणमते अपक्षीयते विनश्यति इति।"

ये हैं -

- जायते
- अस्ति
- वर्धते
- विपरिणमते
- अपक्षीयते
- विनश्यति।

- ~~जायते~~ जायते :- यह जायते का अर्थ है - 'उत्पन्न होना'। जब बीज से अंकुर निकलता है तो कहते है अंकुर पैदा हुआ। यह भाव विकार उत्पन्न होना को बताता है परन्तु होना भाव विकार का निषेध नहीं करता है।

- अस्ति :- अस्ति का अर्थ है - होना। यह भाव विकार अस्तित्व को बताता है।

- वर्धते :- इसका अर्थ है - वृद्धि। वृद्धि दो प्रकार की होती है -
  (क) शरीर की वृद्धि
  (ख) शरीर से सम्बद्ध अवयवों की वृद्धि।

~~यथा~~ वर्धते शरीरेण ~~[illegible]~~, वर्धते विजयेन।

~~यहाँ वृद्धि से तात्पर्य वस्तु का अपनी अवस्था में रहते हुए वृद्धि~~

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

• विपरिणमते :- इसका अर्थ है, परिवर्तन। अर्थात् वस्तु का अपनी ~~अवस्था~~ द्रव्यमें रहते हुए उसके अवस्था में परिवर्तन होना ही, विपरिणमते कहलाता

• अपक्षीयते :- अपक्षीयते का अर्थ है - अपक्षय, ह्रास होना। शरीरेण अपक्षीयते - शरीर का ह्रास अर्थात् शरीर का बुढ़ापा आने पर शिथिल पड़ना

• विनश्यति :- इसका अर्थ है - नाश होना। यह भाव विकार अन्तिम भाव विकार है, यह भाव विकार अपक्षय के पश्चात् होता है। जब अपक्षय अपनी अन्तिम अवस्था को प्राप्त करता है तब वह विनश्यति की ~~पूर्व~~ प्रारम्भिक अवस्था होती है।

उत्तर - 1(F) (i) समानाक्षर :-

आचार्य शौनक ने ऋक्प्रातिशाख्य में समानाक्षर की परिभाषा इस प्रकार दी है -

"समानाक्षराण्यादितः"

अर्थात् आरम्भ (आदि) के आठ अक्षर (अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ) समानाक्षर कहलाते हैं।

(ii) स्वरभक्ति :-

स्वरभक्ति की परिभाषा इस प्रकार है -

"स्वरभक्ति पूर्वभागेक्षराङ्गम्"

अर्थात् स्वर से पूर्व 'र' और 'ल' स्वर में स्थित 'अ' और 'आ' के पूर्वाङ्ग ~~भाग~~ होते हैं।

यथा - शतवल्श: में 'ल' पूर्व में स्थित 'अ' का ~~भाग~~ अङ्ग है। आर्ष्टिषेण: में 'र' पूर्व में स्थित 'आ' का अङ्ग है।

उत्तर-1-(क) **गोपथ ब्राह्मण !-** प्रतीक वेद का अपना ~~सब~~ पृथक् ब्राह्मण होता है। अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण गोपथ ब्राह्मण है। इसमें अथर्ववेद की महत्ता बतायी गयी है। सभी वेद अथर्ववेद से उत्पन्न हुए हैं तथा ॐ की भी उत्पत्ति इसी से हुयी है और उस ओउम् से समस्त संसार की उत्पत्ति बतायी गयी है।

उत्तर-1(H) ऋग्वेद चतुर्वेदों में सबसे प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण वेद है। यह वेद धार्मिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक सभी दृष्टि से अन्यतम है।

ऋग्वेद की दार्शनिक विचारधारा द्वारा सूक्ष्म-से-सूक्ष्म चिंतन किया जा सकता है।

ऋग्वेद के कुछ प्रमुख संवाद हैं-

1- यम-यमी संवाद

2- पुरूर[illegible]शी संवाद

3- सरमा- पणि संवाद

उत्तर-1(I) उपनिषदों को वेदान्त भी कहा जाता है। उपनिषदों की संख्या 108 है। इनमें 10 प्रमुख उपनिषद् हैं जो निम्न हैं।-

माण्डूक्योपनिषद् के अनुसार, ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, बृहदारण्यक, छान्दोग्य, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी।

ईशावास्योपनिषद् !- ईशावास्योपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद

Paper Code

की वाजसनेयि संहिता का चालीसवाँ अध्याय है। इसे ईशोपनिषद् भी कहते हैं। इस उपनिषद् में 18 मन्त्र हैं। ईशावास्योपनिषद् में विद्या - अविद्या, सम्भूति - असम्भूति, ब्रह्म आदि के विषय में बताया गया है। इस उपनिषद् का नाम ईशावास्योपनिषद् ईशा + वास्यम् से बना है अर्थात् ईश्वर के द्वारा व्याप्त।

ईशावास्यमिदं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥

खण्ड ब

उत्तर - 2 **वेदांग** :- वेदांग शब्द दो शब्दों वेद + अङ्ग के योग से बना है। वेद का अर्थ यहाँ व्यापक है अर्थात् 'वेद' शब्द के अन्तर्गत चतुर्वेदों (ऋक्, यजुष, साम, अथर्व) के अतिरिक्त ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् भी आते हैं। तथा 'अङ्ग' का अर्थ होता है - बताना, व्याख्या करना अर्थात् वेदांगों से वेदों को सरलीकृत रूप से पढ़ा जा सकता है, समझा जा सकता है।

वेदांग छः हैं -

- शिक्षा
- कल्प
- व्याकरण
- छन्द
- ज्योतिष
- निरुक्त

→ वेदाङ्ग

अष्टाध्यायी के प्रणेता पाणिनी ने वेद रूपी पुरुष के छः अवयव माने हैं -

Paper Code

छन्दो पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषमयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ॥

अर्थात् वेद रूपी पुरुष के पैर छन्द हैं, हाथ कल्प है, ज्योतिष उसके नेत्र हैं, निरुक्त श्रोत्र है, शिक्षा घ्राण और व्याकरण उसका मुख है।

निरुक्त :-

निरुक्ताचार्य यास्क ने अपने ग्रन्थ में निरुक्त की महत्ता स्पष्ट की है कि इसके ज्ञान के बिना मन्त्रों के अर्थ का ज्ञान नहीं हो सकता है।

'अथापि इदम् अ[illegible] मन्त्रेषु अर्थप्रत्ययो न विद्यते।'

निरुक्त द्वारा मन्त्रों के अर्थ और अर्थ करने की पद्धति का ज्ञान तो होता ही है साथ ही वैदिक और लौकिक भाषा के दुरूह शब्दों के निर्वचन का ढंग भी ज्ञात हो जाता है।

इसके अतिरिक्त पद पाठ और देवताओं के नामादि विषयों में भी निरुक्त सहायक ग्रन्थ है। इसलिए निरुक्त को व्याकरण के समान या उससेकहींअधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

खण्ड - स

उत्तर - 9 ऋग्वेद में इन्द्रादि देवताओं के बाद 'वरुण' का स्थान आता है। वरुण सूक्त में वरुण को एक शासक और नियन्त्रक के रूप में वर्णित किया गया है। वरुण पृथ्वी पर शासन करता है। उसके गुप्तचर विश्व

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

भर में फैले रहते है।

ऋग्वेद में वरुण के पाशों का वर्णन अधि
मिलता है। ये पाश पापियों को, कुकृत्य करने वा
को बाँध लेते है। पश्चाताप करने वालों के प्रति
वरुण दयालु है। वरुण सूक्त में स्थान-स्थान पर
वरुण देव से रक्षा की स्तुति की गयी है।

वरुण सूक्त में वरुण की आँखो, भुजाओं आदि
का वर्णन किया गया है। सूर्य वरुण का नेत्र है। व
वरुण सूर्य के द्वारा हम सब को देखता है। वरुण
दूरदृष्टा तथा हजारों नेत्रों वाला है। उसका रथ सूर्य
के समान चमकदार है। वरुण सुनहरा चोगा पहनता

वरुण देव पश्चाताप करने वालों के प्रति दयालु
वह वरुण नियन्त्रक है, यह नदियाँ उसकी आज्ञा से
बहती है। पक्षी उसकी आज्ञा से उड़ते है, मेघ उसकी आ
से वर्षा करते है आदि।

"यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम्"

अन्त में वरुण देव से स्तुति करते हैं कि "वे हमें
अच्छे मार्ग की ओर ले जाएँ, सन्मार्ग में लगावें
हमें दीर्घ आयु बनावें।"

Paper Code

Paper Code

10

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

11

Paper Code

12

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

13

Paper Code

14

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

15

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

16

Paper Code

17

Paper Code

18

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

19

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

21

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Paper Code

24

Do Not Write anything in this Portion